परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

ईश्वरीय निमंत्रण

सभी आत्माओं के परमपिता निराकार ज्योतिबिंदु स्वरूप परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण १९३७ में ब्रह्मा तन में हो चुका है। वे दूरदेश परमधाम से सत्यधर्म स्थापन व अधर्म विनाश कर विश्व में पुनः शांति स्थापन करने आये हैं।

ब्रह्मा विष्णु शंकर के रचयिता त्रिमूर्ति शिव ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना तथा शंकर द्वारा पुरानी कलियुगी दुनिया का विनाश करा रहे हैं।

सच्चा सद्‌गुरु एवं सद्‌गति दाता होने से विनाश पश्चात वे सभी को इस कलियुगी नरक से मुक्त कर वापस मुक्तिधाम ले जायेंगे।

गीता ज्ञान दाता भगवान शिव प्राचीन राजयोग सीखाकर आत्माओं को स्वर्ग में सदा सुख व शांति से रहने की सद्‌गति दे रहे हैं। कलियुगरूपी अज्ञानरात्रि में उनका अवतरण ही हम शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं व शिवलिंग के रूप में उन्हें पुजते हैं।

महाभारत की लड़ाई के बाद स्वर्ग के द्वार खुलेंगे उसके पहले आप भी इस ईश्वरीय ज्ञान को किसी भी ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेवा केंद्र में पधारकर ग्रहण कर एक सेकण्ड में विश्व का मालिक २१ जन्मों के लिए बनने का भाग्य तथा सच्चा सुख शांति का सही मार्ग जान लें ताकि अंत में दिल से पछताना ना पड़े कि भगवान धरती पर आये भाग्य बाँटे और हमें पता ही नहीं पड़ा।

भगवान शिव यही संदेश देते हैं “मीठे बच्चे अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम पावन (Holy) बन जायेंगे।

ईश्वरीय संदेश

परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

विश्व में शांति स्थापन सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा कर रहे है। एक सेकण्ड में विश्व का मालिक २१ जन्मों के लिए बन सकते हैं।

भारत में जब लक्ष्मी नारायण का राज्य था तो विश्व में शांति थी। उनका अटल, अखंड, सदा संपन्न पवित्र दैवी स्वराज्य था जिसको रामराज्य या स्वर्ग कहते हैं तो आज उसके विपरीत अशांति, दुःख, गरीबी है जिसे रावणराज्य या नर्क कहते हैं।

परमात्मा शिव जो निराकार ज्योतिबिंदु स्वरुप हैं ज्ञान के सागर शांति के सागर आनंद के सागर हैं. ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति हैं हमें बतलाते हैं कि यह विश्व नाटक पूरा होने में अब कुछ ही समय बाकी है। कलियुगी पुरानी दुनिया के विनाश के पश्चात ही नई सतयुगी दुनिया होगी। तुम आत्मा मेरी संतान हो उसके पहले मेरे से स्वर्ग का वर्सा ले लो। अब सभी को पवित्र बन वापस अपने घर परमधाम चलना है।

भगवान शिव ५ हजार वर्ष पहले जैसा पुनः गीता ज्ञान द्वारा स्वर्ग स्थापन करने आये हैं, भारत को श्रेष्ठ बनाने की तथा भारतवासियों और अन्य आत्माओं को मुक्ति- जीवनमुक्ति देने की सेवा कर रहे हैं क्योंकि शिव ही सर्व के सद्गुरु एवं सद्गति दाता हैं। पावन बनने के लिए 'अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो यही महामंत्र सभी को देते हैं तथा विकारो का दान देने को कहते हैं जिसके कारण हम घोर दुःखी बने हैं।

परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

गीता भगवान त्रिमूर्ति शिव के फरमान

गीता ज्ञान दाता परमधाम निवासी श्रीकृष्ण के पारलौकिक पिता ब्रह्मा, विष्णु शंकर के भी रचयिता निराकार ज्योतिबिंदु स्वरूप परमात्मा शिव जिनका यादगार शिवलिंग अथवा अवतरण दिन शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं अभी वास्तविकरूप में कलियुगी अज्ञानांधकार रूपी रात्रि में अति धर्मग्लानि के समय में १९३७ से वृद्ध ब्रह्मा तन में अवतरित हो सभी आत्माओं प्रति संदेश दे रहे हैं कि तुम ज्योतिबिंदु स्वरूप आत्मा मेरी संतान हो तथा इस सृष्टि पर अपना ८४ जन्मों का अविनाशी पार्ट बजाने आई हो। सतयुग त्रेतायुग में भारत में जब लक्ष्मी नारायण का रामराज्य था तो सभी पवित्रता, सुख, शांति में थी। फिर द्वापर कलियुग या रावणराज्य में विकारों के वशीभूत होने से पतित एवं दुःखी होती गई। अब पुनः मैं स्वर्ग की स्थापना कर रहा हूँ और तुमको फिर से पवित्र बनाकर भविष्य नई दुनिया का मालिक बनाने व वापस अपने घर परमधाम ले चलने आया हूँ क्योंकि ५००० वर्ष का यह सृष्टि रूपी नाटक पूरा होने वाला है। महाभारत की लड़ाई (विश्वयुद्ध) के बाद स्वर्ग के द्वार खुलेंगे उसके पहले गीता ज्ञान सार भगवान शिव दे रहे हैं: नष्टोमोहा, स्मृतिर्लब्धा, मन्मनाभव देह के सब धर्म एवं संबंध को भूल अपने को आत्मा समझ मामेकम याद करो तो जन्म जन्मांतर के पाप कटते जायेंगे।